स्वर विहार

कक्षा 11 (संगीत)

स्वर विहार

कक्षा 11 (संगीत)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति
पुस्तक – स्वर विहार (संगीत) कक्षा 11

संयोजिका एवं लेखिका
डॉ. सीमा राठौड़
वरिष्ठ व्याख्याता संगीत
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर

लेखकगण

डॉ. प्रेम भण्डारी
सेवानिवृत विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग
मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय,
उदयपुर

श्री दुष्यन्त त्रिपाठी
विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग
सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय
ब्यावर, अजमेर

डॉ. मधु माथुर
वरिष्ठ व्याख्याता, संगीत
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

श्रीमती अनुपमा भट्ट
व्याख्याता संगीत,
राज. आदर्श बालिका उ.मा. विद्यालय
गणगौरी बाजार, जयपुर

अभिष्ट

देशी व मार्गी संगीत की दो चिरंतन धाराऐं युगों–युगों से मानव मन का रंजन करती रही हैं। देशी संगीत (प्रचलित अथवा लोकसंगीत) व्यापक व सर्वग्राह्य है। यहां इस प्राक्कथन की विषय वस्तु मार्गी (शास्त्रीय) संगीत है।

वैदिक संगीत की दिव्य अनुभूतियाँ, तानसेन के सांगीतिक चमत्कार, मींरा के दिव्य संगीत का प्रभाव, स्वामी हरिदास, नायक गोपाल, बैजू, बख्शू जैसे महान संगीतज्ञों की संगीत प्रतिभा की किंवदंतियां तथा इतिहास में प्राप्त कुछ लिखित साक्ष्य ही हम पश्चातवर्तियों को उपलब्ध है। ठोस व व्यावहारिक प्रमाण के अभाव में उनकी कला की मात्र चर्चा ही शेष है।

परंतु आज विज्ञान के चमत्कारी प्रयोगों से महान संगीतज्ञों की कला को सुरक्षित रखने व सर्वसुलभ कराने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। आज संगीत शिक्षा हेतु कष्टसाध्य भटकाव की आवश्यकता नहीं है। विविध दृश्य श्रव्य उपकरण, इंटरनेट, पुस्तकें, संगीत कार्यक्रम, शिक्षा के व्यापक प्रसार, व्यक्तिगत व शासकीय प्रयासों आदि ने संगीत विद्यार्थियों को संदर्भ सामग्री के भंडार उपलब्ध करवा दिए है। लेकिन तमाम अध्ययन सामग्री की उपलब्धता के बावजूद भी विद्यार्थी के लिए मूलभूत अध्ययन सामग्री पुस्तक है तथा पाठ्यक्रम आधारित पुस्तक की उपलब्धता उन दूर दराज के ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए सर्वाधिक है, जो साधनों की कमी या अन्य कारणों से मात्र पुस्तक के सहारे ही अध्यापन कार्य कर पाते हैं। अतः पुस्तक की अध्ययन सामग्री सरल, सुबोध, चित्रात्मक व आकर्षक होना आवश्यक है।

इस उद्देश्य की पूर्णता हेतु मा. शि. बोर्ड. अजमेर के सतत् प्रयासों से यह पुस्तक विद्यार्थियों के समक्ष है। गायन, मैलोडी वाद्य, ताल वाद्य तथा कथक नृत्य इन 4 खंडों में विभक्त इस पुस्तक लेखन में यह प्रयास किया गया है कि सरल भाषा के साथ संगीत संबंधी सामान्य ज्ञान की कुछ जानकारियाँ विद्यार्थियों को उपलब्ध करायी जा सके, साथ ही संगीत के लब्ध प्रतिष्ठित विद्ववत्जनों की प्रकाशित पुस्तकों के मंथन से प्राप्त नवनीत के द्वारा प्रत्येक अध्याय की विषयवस्तु को तथ्यात्मक कलेवर प्रदान करने का भी प्रयास किया गया है। इंटरनेट की सहायता से चित्रों का प्रयोग किया है जिनमें पुस्तक की पाठ्य सामग्री से संबंधित चित्रों के अलावा महान संगीतकारों के चित्र, मध्यकालीन रागमाला चित्र व्यंजना, विविध नृत्य शैलियों, मुद्राओं, तालों आदि का चित्रात्मक ज्ञान निश्चित तौर पर विद्यार्थियों की सांगीतिक अभिरूचि में वृद्धि करेगा, साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु संदर्भ पुस्तिका के रूप में भी उच्च शिक्षा के विद्यार्थी इसका प्रयोग कर सकेगें। पुस्तक के सुन्दर संयोजन एवं डिजाइनिंग कार्य हेतु **राजेन्द्र सिंह, रंगकर्मी, अजमेर** के आभारी हैं।

उत्तर भारत की प्रमुख कथक नृत्य शैली को इस वर्ष से प्रारंभ करने हेतु संपूर्ण संगीत जगत, मा. शि. बोर्ड अजमेर के समस्त नीति नियंताओं तथा राज्य सरकार का आभारी है।

पुस्तक में भूलवश किसी त्रुटि हेतु संपादक मंडल क्षमाप्रार्थी है।

सम्पादक मण्डल

मनुष्य की पाशविक वृत्तियों के शमन व शोध हेतु जीवन में संगीत की नितांत आवश्यकता है। – स्वामी विवेकानन्द

संगीत की मधुरता आत्मा व परमात्मा के बीच के अनन्त को भरती है।
– रविन्द्रनाथ टैगोर

संगीत विज्ञान व मस्तिष्क के ज्ञान से परे आत्मा व परम् ध्यान के मध्य की रिक्तता की मधुर ध्वनियां हैं। –डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

योगीजन जिस ब्रह्म की प्राप्ति में अपने रक्त मांस को सुखा देते हैं वह संगीत से सहज ही प्राप्य है। – ओशो

संगीत और पुस्तकों के सहारे मैं सम्पूर्ण जीवन आनन्द से काट सकता हूं।
– ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

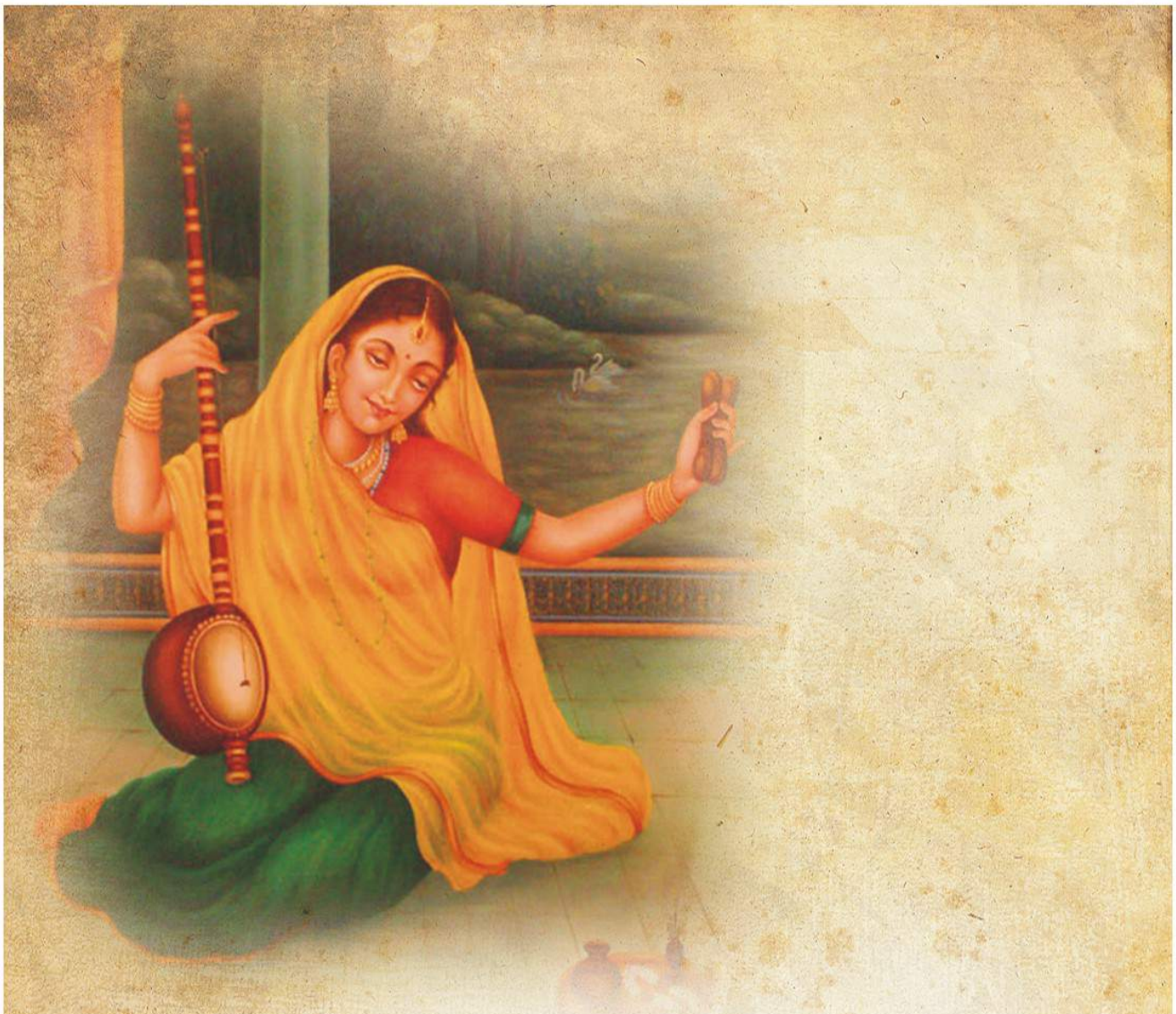

सबसे तोड़ो, सुर से जोड़ो, सुर ही सुमिरन।
सुर ही पूजा, सुर ही ईश्वर, सुर ही है जीवन।।
सुर में शक्ति, सुर ही भक्ति, सुर है देव अनंत।
सुर ही शाश्वत सत्य जगत का, सुर ही दिक् दिगंत।।
सुर का पान है, अमरलोक और राग रुप है रथ।
सुर–साधु, सुर–संत, सुर–सलिल साधे पंकज पंथ।।
सुर–सुर–सुर–सुर क्रम इस सुर का अनल–अनंत, अनूठा।
राग रुप में, तान रुप में कण–कण प्रतिपल छूता।।
आदिकाल से वर्तमान तक सुर स्वराज छाया है।
गीति–साम और लोक–शास्त्र क्या, हर स्वरुप पाया है।।
मीरा की करताल, कृष्ण का मुरली रुप जो पाया है।
शिव का डमरु, देवगान सब, सारी स्वर की माया है।।

–दुष्यन्त त्रिपाठी

अनुक्रमणिका

खण्ड 1	**गायन**	**पृष्ठ संख्या**
अध्याय 1.	परिभाषाएँ	9–23
अध्याय 2.	रागों का शास्त्रीय वर्णन	24–26
अध्याय 3.	संगीतज्ञों का योगदान एवं जीवनियाँ	27–37
अध्याय 4.	विविध बंदिशों का विस्तृत शास्त्रीय ज्ञान	38–40
अध्याय 5.	पं. विष्णु नारायण भातखण्डे की स्वरलिपि पद्धति	41–44
अध्याय 6	तालों और बंदिशों का स्वरलिपि लेखन	45–47
	बंदिशों की स्वरलिपि	48–61
खण्ड 2	**स्वर वाद्य**	
अध्याय 1.	परिभाषाएँ	62–73
अध्याय 2.	रागों का विस्तृत वर्णन	74–82
अध्याय 3.	संगीतज्ञों की जीवनियाँ	83–89
अध्याय 4.	ताल	90–92
अध्याय 5.	वाद्य यन्त्र परिचय	93–96
अध्याय 6	पं. विष्णु नारायण भातखण्डे की स्वरलिपि पद्धति	97–98
खण्ड 3	**ताल वाद्य**	
अध्याय 1.	परिभाषाएँ	99–103
अध्याय 2.	ताल के दस प्राण	104–109
अध्याय 3.	तबला एवं पखावज की रचना	110–117
अध्याय 4.	संगीतज्ञों की जीवनियाँ एवं पूर्ण परिचय	118–122
अध्याय 5.	प्रचलित तालें	123–130
खण्ड 4	**कथक नृत्य**	
अध्याय 1.	संगीत व नृत्य संबंधी पारिभाषिक शब्द	131–139
अध्याय 2.	कथक नृत्य के घराने	140–144
अध्याय 3.	नृत्यकारों की जीवनियाँ	145–149
अध्याय 4.	शास्त्रीय नृत्य शैलियों का परिचय	150–164
अध्याय 5.	राजस्थान के लोक नृत्य	165–171
अध्याय 6.	ताल	172–176
अध्याय 7.	प्रायोगिक कार्य हेतु परिशिष्ठ	177–184